

* हर्षवर्धन कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति

हर्षवर्धन (606-647 ई.) सातवीं शताब्दी के उत्तर भारतीय सम्राट थे, जिन्होंने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की और लगभग चार दशकों तक शासन किया। उनका शासनकाल भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण युग माना जाता है, खासकर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से। हर्षवर्धन के राज्य का अध्ययन उनके समकालीन परिस्थितियों को समझने के लिए आवश्यक है।

राजनीतिक स्थिति:

हर्षवर्धन के सत्ता में आने से पहले, उत्तर भारत कई छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद राजनीतिक अस्थिरता का माहौल था। हर्षवर्धन ने थानेश्वर के वर्धन वंश की शक्ति को पुनः स्थापित किया और धीरे-धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उन्होंने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया, जो उस समय एक महत्वपूर्ण व्यापारिक और राजनीतिक केंद्र था।

हर्षवर्धन की राजनीतिक सफलता का श्रेय उनकी कुशल रणनीति, कूटनीति और सैन्य क्षमता को दिया जाता है। उन्होंने पड़ोसी राज्यों के साथ गठजोड़ किया और कुछ राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया। उन्होंने चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय को भी पराजित किया, हालाँकि वे उसे अपने राज्य में मिलाने में असफल रहे। हर्षवर्धन का साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक और पूर्व में कामरूप (असम) से लेकर पश्चिम में वल्लभी (गुजरात) तक फैला हुआ था।

हर्षवर्धन की प्रशासनिक व्यवस्था भी काफी सुसंगठित थी। उन्होंने अपने साम्राज्य को विभिन्न प्रांतों में विभाजित किया, जिनका शासन कुमारमात्य नामक अधिकारी चलाते थे। उन्होंने राजस्व व्यवस्था को भी सुदृढ़ किया और करों को निश्चित किया। हर्षवर्धन ने एक विशाल सेना का भी गठन किया, जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सैनिक शामिल थे।

सामाजिक स्थिति:

हर्षवर्धन के समय में समाज चार वर्णों में विभाजित था – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। हालाँकि, जाति व्यवस्था में कुछ लचीलापन था, और विभिन्न जातियों के बीच व्यवसायिक संबंध भी देखे जाते थे। महिलाओं की स्थिति में भी कुछ सुधार हुआ था, और उन्हें शिक्षा और धार्मिक कार्यों में भाग लेने की अनुमति थी। लेकिन, बाल विवाह और सती प्रथा जैसी कुप्रथाएं भी समाज में प्रचलित थीं।

हर्षवर्धन ने सामाजिक कल्याण के लिए कई कार्य किए। उन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों के लिए दानशालाएं स्थापित कीं और धर्मशालाओं का निर्माण कराया। उन्होंने अपराधियों को दंडित करने के लिए कठोर कानून बनाए, जिससे समाज में शांति और व्यवस्था बनी रही।

आर्थिक स्थिति:

हर्षवर्धन का शासनकाल आर्थिक समृद्धि का काल था। कृषि और व्यापार दोनों में उन्नति हुई। भूमि कर राज्य की आय का मुख्य स्रोत था। विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती थीं, जिनमें धान, गेहूं, जौ, कपास और गन्ना प्रमुख थे।

व्यापार भी अपने चरम पर था। कन्नौज, प्रयाग, थानेश्वर और वल्लभी जैसे शहर महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र थे। देश के भीतर और बाहर व्यापार होता था। समुद्री मार्ग से भी व्यापार होता था, और भारत के व्यापारिक संबंध चीन, दक्षिण पूर्व एशिया और पश्चिमी देशों के साथ थे।

सांस्कृतिक स्थिति:

हर्षवर्धन का काल सांस्कृतिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण था। वे स्वयं एक विद्वान और लेखक थे। उन्होंने 'नागनंद', 'रत्नावली' और 'प्रियदर्शिका' नामक तीन नाटक लिखे। उनके दरबार में बाणभट्ट जैसे प्रसिद्ध कवि और लेखक रहते थे, जिन्होंने 'हर्षचरित' और 'कादंबरी' जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। इस काल में संस्कृत साहित्य का भी विकास हुआ।

हर्षवर्धन बौद्ध धर्म के अनुयायी थे, लेकिन उन्होंने अन्य धर्मों को भी समान रूप से सम्मान दिया। उनके शासनकाल में नालंदा विश्वविद्यालय एक प्रमुख शिक्षा केंद्र के रूप में उभरा, जहाँ देश-विदेश से विद्यार्थी बौद्ध धर्म और अन्य विषयों का अध्ययन करने आते थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग इसी समय भारत आया था और उसने नालंदा में अध्ययन किया था। उसने हर्षवर्धन के शासनकाल और समाज के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी है।

कला और वास्तुकला में भी इस काल में प्रगति हुई। हर्षवर्धन ने कई स्तूपों, विहारों और मंदिरों का निर्माण कराया। उनकी राजधानी कन्नौज एक समृद्ध और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित हुई।

निष्कर्ष:

हर्षवर्धन का शासनकाल भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण युग था। उन्होंने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की और अपनी नीतियों के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा दिया। उनका राज्य एक शक्तिशाली और समृद्ध राज्य था, जिसने भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया। हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उनका साम्राज्य बिखर गया, लेकिन उनके द्वारा स्थापित की गई प्रशासनिक और सांस्कृतिक परंपराएं आने वाले समय तक भारतीय समाज को प्रभावित करती रहीं।